खंड २ संख्या ३

बिहार विधान-सभा वादवृत्त

सरकारी प्रतिवेदन

(भाग १—कार्यवाही—प्रश्नोत्तर)

सोमवार, तिथि २ जून १९८९

सत्यमेव जयते

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय, बिहार, पटना
द्वारा मुद्रित
१९९०

[मूल्य—३७ पैसे]

अध्यक्ष--सरकार ने तो बतलाया .....

श्री हरिनाथ मिश्र--हुजूर, जांच चूंकि खतम हो गयी है, तो मैं सरकार से यह जानना चाहता हूँ कि जांच किस सरकार ने खतम की और खतम करने के बाद कब से सरकार सोच रही है कि कौन-कौन-सी कार्रवाई किस-किस पर की जाय ?

श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह--जांच खतम कर दी गयी है और कार्रवाई का प्रोसेस जारी किया जा रहा है ।

अध्यक्ष--शान्ति, शान्ति । प्रश्न पूछने का उद्देश्य है कि जांच खतम हो गयी है तो किस-किस व्यक्ति के विरुद्ध कौन-कौन-सी कार्रवाई की जा रही है ?

श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह--सम्बन्धित व्यक्ति पर, जिसके खिलाफ फाइंडिंग है उसपर किस प्रकार कौन-सा ऐक्शन लिया जाय, उसके प्रोसिड्योर के बारे में वर्त्तमान सरकार विचार कर रही है ? प्रोसीड्योर के बारे में सोच करके सम्बन्धित व्यक्ति पर कार्रवाई की जायेगी ।

श्री हरिनाथ मिश्र--अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूँ कि राष्ट्रपति शासन में जांच खतम की गयी या किस सरकार ने जांच खतम की और कब जांच खतम हुई ? जब जांच खतम हुई तो एक स्टेज हुआ और यह स्टेज खतम हो गया तो यह कब खतम हुआ और कब सेयें लोग विचार कर रहे हैं ?

श्री हरिहर प्रसाद सिंह--अध्यक्ष महोदय, कमीशन की रिपोर्ट जनवरी, १९६९ में आयी । तो जब गवर्नमेंट के सामने आयी तो उस समय कुछ नहीं हुआ । वर्त्तमान सरकार आयी है, तो इस मामले को देखेगी ।

अध्यक्ष--सरकार ने आरोप के बारे में जांच की । अब, कब जांच की गयी ? अभी जैसा कि पूछा जा रहा है किस गवर्नमेंट ने की ?

श्री हरिनाथ मिश्र--प्रश्न को स्थगित कर दिया जाय, अध्यक्ष महोदय । जरा तैयार होकर सरकार आयें तो अच्छा है ।

श्री हरिहर प्रसाद सिंह--इसी गवर्नमेंट ने जांच की है

रामनवमी जुलूस एवं मुहर्रम जुलूस में संघर्ष ।

१६ । श्री जनार्दन तिवारी--क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि--

(१) क्या यह बात सही है कि मुंगेर में दिनांक २९ मार्च १९६९ के प्रातःकाल चौक बाजार में रामनवमी के जुलूस तथा मुहर्रम के जुलूस में जमकर पथराव और संघर्ष हुआ जिसके फलस्वरूप २० व्यक्ति घायल हो गये ;

(२) क्या यह बात सही है कि संघर्ष के दौरान दूकानों में आग लगाई गयी और एक मोटर ट्रान्सपोर्ट कम्पनी में भी आग लगाई गई ;

(३) क्या यह बात सही है कि इस कांड के पीछे राज्य के भूतपूर्व मंत्री श्री मो० हाशिम का हाथ है, जो फरार हैं ?

श्री हरिहर प्रसाद सिंह—(१) यह सही है कि दिनांक २९ मार्च १९६९ को प्रातःकाल रामनवमी एवं मुहर्रम के जुलूसों के बीच पथराव हुआ जिसके फलस्वरुप ४० व्यक्ति घायल हुए।

(२) यह सही है कि मुंगेर शहर के कुछ मुहल्ले में आग लगाने की घटना हुई परन्तु किसी मोटर ट्रान्सपोर्ट कम्पनी में आग नहीं लगाई गई।

(३) दिनांक २९ मार्च १९६९ को जो घटनाएं हुई उनके संबंध में हुई फौजदारी मुकदमे दायर किये गये हैं जिसका अनुसंधान जारी है। अतः यह कहना कठिन है कि घटनाओं के पीछे किसका हाथ था। परन्तु यह सही नहीं है कि भूतपूर्व मंत्री श्री मो० हाशिम फरार हैं। वस्तुतः उन पर कोई मोकदमा पुलिस अनुसंधान के अन्दर नहीं है।

श्री जनार्दन तिवारी—मुंगेर में जो घटना २९ मार्च को घटी, उस तरह की घटना प्रान्त में बहुत हुआ करती है, हिन्दु-मुसलमान का झगड़ा हर बात पर हो जाया करता है। खंड (३) के उत्तर में सरकार ने कहा है कि "यह कहना कठिन है कि घटनाओं के पीछे किसका हाथ था ? परन्तु यह सही नहीं है कि भूतपूर्व मंत्री मो० हाशिम फरार हैं। वस्तुतः उन पर कोई मोकदमा पुलिस के अनुसन्धान के अन्दर नहीं है।" तो मैं सरकार से पूछना चाहता हूँ कि प्रान्तव्यापी इस प्रकार घटना के पीछे क्या पाकिस्तानी तत्व पूरे प्रदेश में सक्रीय हैं ?

श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह—यह पूरक इस प्रश्न से नहीं उठता है।

श्री जनार्दन तिवारी—कैसे नहीं उठता है ? पूरे प्रान्त में जब इस प्रकार की घटना हो रही है, रांची में हुई, मुंगेर में हुई, तो इसके पीछे पाकिस्तानी तत्व है या नहीं। इसकी छानबीन क्या सरकार ने की है ? मेरा निश्चित मत है कि पाकिस्तानी तत्व इसके पीछे हैं।

अध्यक्ष—निश्चित मत आपका हो सकता है, मगर एभिडेन्स क्या है ?

श्री हरिहर प्रसाद सिंह—जब एक सेक्शन का कहना है कि पाकिस्तानी एजेन्ट का यह काम है, दूसरे सेक्शन का कहना है कि हिन्दुस्तान के लोगों का ही यह काम है और तीसरे सेक्शन का कहना है कि कम्यूनिस्टों का इसमें हाथ है, तो पूरी जानकारी बिना कैसे इस फोरम से कहा जा सकता है कि किसका हाथ इसके पीछे है ?

श्री केदार पान्डेय—यह सब-जुडीस मामला है।

श्री जनार्दन तिवारी—यह कहकर पान्डेजी भागना चाहते हैं कि यह मामला सबजुडीस है। मगर मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार के पास ऐसी कोई सूचना है कि इस तरह की घटना के पीछे पाकिस्तानी तत्व नहीं है ?

श्री कोशलेन्द्र नारायण सिंह--मेरा प्वायन्ट ऑफ आर्डर है । प्रश्न के सम्बन्ध में परिपाटी यह है कि किसी खास घटना के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा जा सकता है और व्यापक पूरक नहीं पूछा जा सकता है ।

अध्यक्ष--ठीक है । उस हालत में जवाब नहीं देना चाहिए ।

श्री रवीशचन्द्र वर्मा--खंड (३) में कहा गया है "कि दिनांक २९ मार्च १९६९ को जो घटनाएं हुई, उनके संबंध में हुई फौजदारी मुकदमे दायर किए गए हैं, जिसका अनुसंधान जारी है । अतः यह कहना कठिन है कि घटनाओं के पीछे किनका हाथ था ? परन्तु यह सही नहीं है कि भूतपूर्व मंत्री मो० हाशिम फरार हैं । वस्तुतः उन पर कोई मोकदमा पुलिस अनुसंधान के अन्दर नहीं है ।" तो मैं जानना चाहता हूँ कि इस प्वायंट पर अनुसन्धान हुआ है या नहीं, कि इसके पीछे किसका हाथ है ? क्या इस चीज को इशू बनाकर कोई अनुसन्धान हुआ या सी० आई० डी० की रिपोर्ट के आधार पर या पुलिस इनभेस्टिगेशन के आधार पर सरकार जवाब दे रही है ?

अध्यक्ष--आपने जो प्रश्न पूछा है वह मुंगेर से सम्बन्धित है । इसका अनुसन्धान भी हो गया है और मुकदमा सबजुडिस है । इसके पीछे किसका हाथ था इसका डिसीजन अभी नहीं हुआ है । इसमें कौन कसूरवार है यह कहना भी अभी मुश्किल है ।

श्री रवीशचन्द्र वर्मा--मेरा पूछना है कि मैंने जो प्रश्न किया है, क्या उस बिन्दु पर अनुसन्धान हुआ है ? घटना से सम्बन्धित कौन व्यक्ति कसूरवार है ? मेरा यह प्रश्न नहीं है क्योंकि यह मामला अभी सबजुडिस है । किसी चीज का जब अनुसन्धान किया जाता है तो उसके लिए बिन्दु बनते हैं । तो मेरा यही पूछना है कि मैंने जो बिन्दू पूछा है उस पर अनुसन्धान हुआ है या नहीं ?

अध्यक्ष--जो प्वाइन्ट आफ इशु है, वह है इसमें किसका हाथ है ? इसका डिसीजन अभी नहीं हो सका है ।

श्री हरिहर प्रसाद सिंह--माननीय सदस्य को मैं बतला देना चाहता हूं कि जबभी कभी साम्प्रदायिक दंगे होते हैं तो हर तरह से पुलिस इनभेस्टिगेशन करने का कोशिश करती है । इनभेस्टिगेशन के दौरान में पुलिस यह देखती है कि किसके वजह से और क्या वजह थी कि ऐसी बात हो गयी । तो अप्रत्यक्ष रूप से ही सही इस बात की जांच हो जाती है कि इसके पीछे किसका हाथ था और किसके साजिस से यह दंगा हुआ है ? मैं आपकी जानकारी के लिए यह भी कह देना चाहता हूं कि अब तक जो इनक्वायरी हुई है (कम्पलीट नहीं हुई है) और जो पोजीशन है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कोई ऐसा इन्सटान्स नहीं मिला है जिससे यह मालूम हो सके कि इसमें पाकिस्तान के ऐजेंट का हाथ था । [****]

[****] अध्यक्ष के आदेशानुसार अवलोपित किया गया ।

अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार हटा या गया ।

श्री विजय कुमार यादव--मैं यह जानना चाहता हूं कि हमारे माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि अनुसंधान चलरहा है और अनुसंधान के सिलसिले में उन्होंने यह बतलाया कि कुछ पार्टियों का भी हाथ है तो क्या अनुसंधान के दरम्यान में यह बात आई है कि साम्प्रदायिक पार्टियों के अलावे कांग्रेस गुट की एक पार्टी का हाथ उसमें है ?

अध्यक्ष--उन्होंने केवल इतना ही कहा है कि लोग कहते हैं कि जनसंघ या कम्युनिस्ट पार्टी करा रही है और कुछ नहीं कहा है ।

श्री सूरज नारायण सिंह--माननीय मुख्य मंत्री ने यह कबूल किया है कि यह जानना कठिन है लेकिन राज्य भर में दंगे हो रहे हैं, जिससे समाज टूटता है, अराजकता फैलती है । इससे मालूम होता है कि सरकार असफल है इसलिये यह कठिन काम है । इसका सरकार अनुसंधान करे कि पोलिटिकिल पार्टी का हाथ है या दूसरे तत्व हैं क्योंकि इसके लिये सरकार की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है । तो मैं जानना चाहता हूं कि इसके लिये सरकार क्या कर रही है ?

अध्यक्ष--यह प्रश्न नहीं उठता है ।

श्री सूरज नारायण सिंह--सरकार कहती है कि कुछ लोग हैं जिनका हाथ है, तो सरकार इसको अस्पष्ट कह रही है । मैं इसको भेग नहीं कहता हूं ।

श्री हुक्मदेव नारायण सिंह यादव--अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि प्रश्न के खंड-३ में लिखा हुआ है कि इस कांड के पीछे राज्य के भूतपूर्व मंत्री श्री मो० हाशिम का हाथ है, जो फरार है और इसके उत्तर में दिया गया है कि भूतपूर्व मंत्री मो० हाशिम फरार नहीं हैं लेकिन दिनांक २९ मार्च, १९६९ को जो घटनाएं हुई, उनके संबंध में हुई फौजदारी मुकदमें दायर किये गये हैं, जिसका अनुसंधान जारी है । लेकिन फिर इसी उत्तर में दिया है कि वस्तुतः उनपर कोई मुकदमा पुलिस अनुसंधान के अन्दर नहीं है । तो मेरा कहना है कि जब इसका उत्तर स्पष्ट है तब और बहुत सा प्रश्न क्यों जोड़ा जा रहा है ?

अध्यक्ष--जो प्रश्न है उसी का उत्तर आता है और उसी के संबंध में पूरक होता है ।

हड़तालियों का बकाया वेतन

१७। श्री युवराज--क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह बात सही है, कि विगत १९६८ के फरवरी के पांच दिनों की अराजपत्रित कर्मचारियों की हड़ताल का वेतन संविद सरकार के मंत्रिमंडल की स्वीकृति के बावजूद भी नहीं भुगतान किया गया; यदि हां, तो कबतक सरकार भुगतान करना चाहती है; यदि नहीं; तो क्यों ?